गुरु नानक – सबद ७०

एक सुआन दुइ सुआनी नाल ॥

राग सिरिराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २४

एक सुआन दुइ सुआनी नाल ॥
भलके भउकहि सदा बइआल ॥
कूड़ छुरा मुठा मुरदार ॥
धाणक रूप रहा करतार ॥१॥
मै पत की पंद न करणी की कार ॥
हउ बिगड़ै रूप रहा बिकराल ॥
तेरा एक नाम तारे संसार ॥
मै एहा आस एहो आधार ॥१॥ रहाउ ॥
मुख निंदा आखा दिन रात ॥
पर घर जोही नीच सनात ॥
काम क्रोध तन वसहि चंडाल ॥
धाणक रूप रहा करतार ॥२॥
फाही सुरत मलूकी वेस ॥
हउ ठगवाड़ा ठगी देस ॥
खरा सिआणा बहुता भार ॥
धाणक रूप रहा करतार ॥३॥
मै कीता न जाता हरामखोर ॥
हउ किआ मुहु देसा दुसट चोर ॥
नानक नीच कहै बीचार ॥
धाणक रूप रहा करतार ॥४॥२९॥

सार: जिस तरह कारकों के आधार पर गति प्राप्त वस्तु प्रभावित और विकसित होती है, यही सिद्धांत हमारे इरादों पर भी लागू होता है जो हमारे चरित्र को आकार देते हैं। हर विचार एक छोटे से कार्य से उत्पन्न होता है जिसके महत्वपूर्ण परिणाम हो सकते हैं। नकारात्मक इरादे अक्सर

बुराइयों को जन्म देते हैं जबकि सकारात्मक इरादे अच्छे गुणों को विकसित करते है। यदि हम अपनी इच्छाओं और अपेक्षाओं पर ध्यान न दें तो वह कर्मों में बदलकर दुखद परिणाम ला सकती हैं। इसके विपरीत, सचेतना के साथ चिंतन हमें बेहतर नतीजों की ओर ले जाता है।

एक सुआन दुइ सुआनी नाल ॥
एक नर कुत्ता दो मादा कुत्तियों के साथ है। यह दृश्य उस मन का प्रतीक है जो माया के प्रभाव में लगातार इच्छाओं और अपेक्षाओं से भरा रहता है।

भलके भउकहि सदा बइआल ॥
सुबह से शाम तक वह भौंकते रहते हैं—यह उस मन का प्रतिनिधित्व करता है जो कभी शांत नहीं होता और नई-नई इच्छाओं को पूरा करने के लिए बेचैन रहता है।

कूड़ छुरा मुठा मुरदार ॥
झूठ एक खंजर की तरह है जो विश्वासघात का घाव देती है और छल एक मुर्दे के समान है जिसमें ईमानदारी की कमी है। यह रूपक बेईमानी के हानिकारक प्रभावों को दर्शाता है।

धाणक रूप रहा करतार ॥१॥
एक शिकारी की आक्रामक प्रवृत्ति की तरह, अनियंत्रित नकारात्मकता उभरती है और चरित्र में प्रकट हो ही जाती है। (१)

मै पत की पंद न करणी की कार ॥
मैंने अच्छी सलाह मानने या नेक काम करने का मार्ग नहीं अपनाया।

हउ बिगड़ै रूप रहा बिकराल ॥
मेरा रूप विकृत है और मैं भयानक बना रहता हूँ, यह भावना अवगुणों के सार को दर्शाती है जो उसके नकारात्मक चरित्र को आकार देती है।

तेरा एक नाम तारे संसार ॥
सर्वव्यापी स्रोत की एकता का चिंतन ही सांसारिक अस्तित्व के माध्यम से मार्गदर्शन कर पार ले जा सकता है।

मै एहा आस एहो आधार ॥१॥ रहाउ ॥
चिंतन का अभ्यास ही मेरी एकमात्र आशा है, ज्ञान प्राप्त करने के लिए यही एकमात्र सहारा है। (१)(विराम)

मुख निंदा आखा दिन रात ॥
मैं दिन-रात दूसरों की निंदा करता हूँ।

पर घर जोही नीच सनात ॥
जो दूसरे के जीवन की लालसा तुलना या ईर्ष्या करता है, वह नीच और घृणित है।

काम क्रोध तन वसहि चंडाल ॥
अधूरी इच्छाएँ और अनसुलझा क्रोध मन-शरीर में एक क्रूर जल्लाद की तरह बस जाते हैं जो हमें नष्ट कर देते हैं।यह प्रतीक है कि ऐसे दोष विनाशकारी हैं।

धाणक रूप रहा करतार ॥२॥
एक शिकारी की आक्रामक प्रवृत्ति की तरह, अनियंत्रित नकारात्मकता उभरती है और चरित्र में प्रकट हो ही जाती है। (२)

फाही सुरत मलूकी वेस ॥
मन एक बाहरी दिखावे में फँस जाता है जो व्यक्ति को गुणी दिखाता है।

हउ ठगवाड़ा ठगी देस ॥
मैं एक धोखेबाज हूँ जो दुनिया को धोखा देने का इरादा रखता हूँ।

खरा सिआणा बहुता भार ॥
मैं ख़ुद को पवित्र और समझदार मानता हूँ लेकिन मेरे इरादे पाप से भरे हैं।

धाणक रूप रहा करतार ॥३॥
एक शिकारी की आक्रामक प्रवृत्ति की तरह, अनियंत्रित नकारात्मकता उभरती है और चरित्र में प्रकट हो ही जाती है। (३)

मै कीता न जाता हरामखोर ॥
मैं अपने कर्मों को नहीं समझता और प्रकृति के नियमों को तोड़ता हूँ।

हउ किआ मुहु देसा दुसट चोर ॥
अपनी बुराइयों को जानकर मैं अपनी अंतरात्मा का सामना कैसे करूँ यह जानते हुए कि मैं एक दुष्ट धोखेबाज हूँ?

नानक नीच कहै बीचार ॥
नानक कहते हैं कि यह मानसिकता बुरे इरादे को दर्शाती है और ख़ुद के कर्मों पर विचार करने की सलाह देते हैं।

धाणक रूप रहा करतार ॥४॥२९॥
एक शिकारी की आक्रामक प्रवृत्ति की तरह, अनियंत्रित नकारात्मकता उभरती है और चरित्र में प्रकट हो ही जाती है। (४)(२९)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि हमारे मूलभूत गुणों को अनदेखा करना प्राकृतिक व्यवस्था को चुनौती देने जैसा है। अगर हम अपने धोखे को अनदेखा करते हैं तो हम अपनी चेतना का सामना नहीं कर सकते। यह मानसिकता आत्म-चिंतन की आवश्यकता पर प्रकाश डालती है। हम विनाशकारी प्रवृत्ति से मुक्त होकर, आत्म-जागरूकता और ईमानदारी को बढ़ावा देने वाले अधिक सकारात्मक सद्गुणों के मार्ग पर चल सकते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com